Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973(Online) Vol. 2 Issue 2
A peer reviewed refereed international Journal Impact Factor 3.12
© Contemporary Research Publication

# यथार्थबोध : संकल्पना और स्वरूप

**डॉ जितेन जे परमार**
**बहाउद्दीन कला महाविद्यालय**
**जूनागढ़**

**पूर्वभूमिका :**

'यथार्थ' शब्द का अर्थ है - सत्य, प्रकृत, उचित में - दरअसल, वस्तुतः । अंग्रेजी में इसे 'रियालिज्म' कहा जाता है । दार्शनिकों का यह सिद्धांत कि दुनिया में भौतिक पदार्थो का स्वतंत्र और वास्तविक अस्तित्व है । कितने ही साहित्य सेवियों का यह सिद्धांत कि गुण-दोष मय इस संसार में हमें जो वस्तुएँ जिस रूप में दिखाई पड़ती है, उनका उसी रूप में आदर्शवाद का पुट उसमें न दिया जाय । एक शब्द और भी बनता है, यथार्थवादी जिसे अंग्रेजी में 'रियालिस्ट' और हिन्दी भाषा साहित्य में यथार्थवाद का अनुयायी कहा जाता है ।[१]

**यथार्थवाद**

यथार्थवाद साहित्य की एक विशिष्ट चिंतन पद्धति है । जिसके अनुसार कलाकार को अपनी कृति में जीवन के यथार्थ रूप का अंकन करना चाहिए । यह दृष्टिकोण आदर्शवाद का विरोधी माना जाता है । आदर्श उतना ही यथार्थ है जितना कि कोई भी यथार्थवादी परिस्थिति । जीवन में अयथार्थ की कल्पना दुष्कर है । यथार्थवाद जीवन की समग्र परिस्थितियों के प्रति ईमानदारी का दावा करते हुए प्रायः सदैव मनुष्य की हीनताओं तथा कुरूपताओं का चित्रण करता है । मध्यकाल से हिन्दी साहित्य में यथार्थवाद की अभिव्यंजना होती आई है । विकृतियाँ, कुरूपताएँ आदि का चित्रण करना यथार्थवाद का लक्ष्य है । बीर, तुलसी आदि की रचनाओं में भी यथार्थवादी प्रवृत्ति है । 'रामचरितमानस' के उत्तरकांड में, 'विनयपत्रिका' के पदों में यथार्थवादी दृष्टिकोण है । यथार्थवाद का हिन्दी साहित्य में प्रथम विकास प्रगतिवाद से हुआ है । प्रगतिवादी साहित्य सृजन में यथार्थवाद महत्वपूर्ण अंग बन चुका है । सभी विधाओं में संघर्ष, विद्रुपता अंर्तद्वंद्व तथा कुरूपताओं का अंकन हुआ ह । कार्ल मार्कस् और फ्रॉयड ने इसके बाद के विकास में योगदान दिया है । मार्कस्वादी सामाजिक जीवन की कटु वास्तविकताओं की ओर संकेत करते हैं ।

**आलोचनात्मक यथार्थवाद :**

इसमें दर्शन का महत्व है । मनुष्य अपने परिवेश में खुद अपने से ही अजनबी बनकर रह गया है । वस्तुओं की तरह यह भी एक ऐसी वस्तु है जिसे जब चाहे मालिक की इच्छा के अनसार खरीदा और बेचा जा सकता है । मनुग्य मनुष्य का पुरजा है । अपनी इच्छा-अनिच्छा का महत्व नहीं है ।

**समाजवादी यथार्थवाद :**

सन् १९३४ ई में पहली कांग्रेस में 'मैक्सिम गोर्की' सर्वप्रथम समाजवादी यथार्थवाद का नाम लेकर उसके चरित्र पर प्रकाश डाला । वस्तुगत यथार्थ को संपूर्णता में उभारा । इतिहास समझना आवश्यक माना । प्रगतिशील शक्ति को उभारने ने की कोशिश की । नई जीवंत यथार्थ दृष्टि यथार्थवाद में है । केवल कोरी कल्पना नहीं ह । जैसे रोमेन्टिक स्वप्न होते है । यथार्थ वैज्ञानिक समझ से जन्मा है । जीवन की गतिमान वास्तविकता यथार्थ में है । इसमें समाजवादी दृष्टिकोण भी है । इसमें शासन व्यवस्था का आधार सामान्य जनता का शोषण है । यथार्थवादी लेखक का दावा है कि उसने मनुष्य को सही रूप में परखा, पहचाना और चित्रित किया है । किन्तु मनुष्य सत्य को पहचानने में असमर्थ है ।

**यथार्थवादी साहित्य चिंतन :**

यथार्थवादी साहित्य चिंतन १९ वी शताब्दी की देन है । वैज्ञानिक आविष्कार के कारण उद्योगीकरण, नई सामाजिक व्यवस्था, नए मानवीय संबंध, नई गद्य भाषा का प्रचलन बढ़ता गया । जीवन को समग्रता में प्रस्तुत करने की क्षमता बढ़ी । साहित्य और कला को यथार्थ जीवन के संदर्भ में देखा । किन्तु साहित्य का मूल्यांकन मात्र साहित्यिक कृति के आधार पर होना चाहिए । कला-चिंतन के केन्द्र में शिव-तत्त्व तथा सहज मानवीय नैतिकता की प्रतिष्ठा होती है । 'तोल्सतोय' कला को लोकमंगल का साधन मानते हैं । वास्तविकता आधुनिक जगत् का चरम सूत्र और नारा है । कला का जीवन से और वास्तविकता से निकट का संबंध है । जीवन के प्रति उत्कृष्ट आग्रह कला-चिंतन का प्राणतत्त्व है ।

**हिन्दी साहित्य में यथार्थवादी चेतना का उद्‌भव-विकास :**

भारतेन्दु के आगमन से आधुनिक हिन्दी साहित्य का युग आरंभ हुआ । कवि के शब्दों में - ''अंगरेज-राज सुख साज सजे सब भारी, पै धन विदेस चलि जात यहै अति खवारी '' इसलिए यथार्थवादी चेतना का सीधा संबंध बदली हुई मनोभूमि के साथ है । ठोस वस्तुजगत का नाता यथार्थ से है । यथार्थ का आश्रयस्थान कथा साहित्य है । हिन्दी कथा साहित्य और सामाजिक यथार्थ का गहरा रिश्ता है । देखा और भोगा हुआ यथार्थ का चित्रण उपन्यास और कहानी साहित्य में हुआ है । साहित्य में यथार्थ को मनोवैज्ञानिक यथार्थ नाम भी दिया गया है ।

सन् १९३६ में प्रगतिशील आंदोलन के उद्‌भव के साथ हिन्दी में यथार्थवाद साहित्य चिंतन की परंपरा का प्रारंभ हुआ है । हिन्दी के यथार्थवाद साहित्य चिंतन को संपन्न करने वालों में - डॉ रामविलास शर्मा, शिवदानसिंह चौहान, प्रकाशचंद्र गुप्त, रांगेय राघव, अमृत राय, चंद्रबलिसिंह, हंसराज रहबर, नामवरसिंह आदि उल्लेखनीय चिंतनकार है । आगे गजानन माधव मुक्तिबोध, रमेश कुंतल मेघ, मार्कण्डेय, विश्वंभरनाथ उपाध्याय, चंद्रभूषण तिवारी आदि ने संपन्न किया ।

**यथार्थवाद और आदर्शवाद**

जीवन का ज्यों का त्यों वर्णन यथार्थ है । यथार्थ का संबंध दैनिक क्रिया से जुड़ा हुआ है । यथार्थ में पाप-पुण्य, धूप-छाँव आर सुख-दु:ख के भाव होते हैं । यथार्थ कठोर सत्य का उद्‌घोषक है । वास्तविकता का उपासक माना जाता है । यथार्थ आदर्श का ही माध्यम ह । यथार्थ और आदर्श एक दूसरे के पूरक है । सत्य पर आधारित वास्तविक सत्ता यथार्थवाद का विषय बन सकती है । यथार्थ दैनिक जीवन की घटनाओं का वर्णन और विश्लेषण भी करता है । यथार्थ सांसारिक वस्तुओं सजीव रूप प्रस्तुत करता है । अनिष्ट के चित्रण द्वारा इष्ट की व्यंजना करना यथार्थवाद का लक्ष्य है । जयशंकर प्रसाद के अनुसार ''यथार्थवाद जीवन की अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार्य है और आदर्श अभावों की पूर्ति के रूप में ।'' प्रेमचंद आदर्शोन्मुख यथार्थवाद को महत्व देते हैं और लिखते हैं - ''यथार्थवाद हम को निराशावादी बना देता है ।'' प्रेमचंद के 'कायाकल्प' उपन्यास का पात्र कहता है - ''यथार्थ का रूप अत्यंत भयंकर होता है और हम यथार्थ को ही आदर्श मान लें तो संसार नरक-तुल्य हो जाये ।''आगे प्रेमचंद जी लिखते हैं - ''यथार्थ यदि हमारी आँखे खोल देता है तो आदर्शवाद हमें उठाकर किसो मनोरम स्थान में पहुँचा देता है ।''

**यथार्थवाद के गुण :**

साहित्याचार्यो ने यथार्थवाद के विभिन्न गुणों की चर्चा की है । जैसे - सरलता या वास्तविकता, सरलता, स्पष्टता, आदर्श की ओर संकेत, वस्तुओं की यथार्थता पर बल, स्वाभाविकता, समाज का वास्तविक चित्रण, जीवन के प्रति सच्चा दृष्टिकोण, समाज को चेतन बनाना, साधारण मानव को निर्देशन देना, जीवन का बहुअंशी चित्रण करना, प्रगतिशीलता का समावेश आदि । डॉ नगेन्द्र ने 'वीणा के न्याय मंदिर में' निबंध में लिखा है -''मैंने यथार्थ में जो विषमताएँ देखी उन पर विवेकपूर्व मनन किया और उनका जो समाधान मुझे मिला वही मेरा आदर्श बन गया ।'' इसलिए यथार्थ कोरी कल्पना या भावुकता की सृष्टि नहीं है ।

भारतेन्दु जी ने 'प्रेमयोगिनी' नामक रचना में काशी का चित्र खींचा है जो यथार्थ दिखाता है -

देखी तुमरी काशी लोगों,
देखी तुमरी काशी ।
जहाँ विराजे विश्वनाथ
विश्वेश्वर जी अविनाशी
लोग निकम्मे भंगी गजंड
लुच्चे को विश्वासी ।
महा आलसी झूठे सुहदे,
बेफिकरे बदमासी ।।

अतियथार्थवाद यथार्थवाद का विस्तृत संस्करण है । मूलत: यथार्थवाद ने साहित्य को नई दृष्टि दी है । अतियथार्थवादी साहित्य ने वस्तुओं का प्रयोग करना सिखाया । अतियथार्थवाद का जन्म फ्रांस में बीसवी शताब्दी में हुआ था ।[३] यथार्थवादियों के अनुसार साहित्य पूर्ण रूप से बौद्धिक नहीं होना चाहिए । यथार्थवाद ने साहित्य को नई दृष्टि दी है । मनुष्य यथार्थ रूप में भाग्य के हाथों में खिलौने के समान है । बौद्धिक तथा कलात्मक रूढियों से अपने आपको मुक्त करता है । अतियथार्थवाद का प्रादुर्भाव स्वित्जरलैण्ड के ज्यरिक नामक नगर में पीड़ित शरणार्थियों द्वारा 'दादाइज्म' से हुआ है । समय १९१६ के लगभग माना जाता है । यथार्थवाद के समर्थक पाठक के सामने मानव चरित्रों को ज्यों का त्यों रख देते हैं । यथार्थवादियों के सामने सच्चरित्रा या दुश्चरित्रा के परिणाम से कुछ लेना-देना नहीं है । बिना प्रयोजन चरित्रों की दुर्बलता और सबलता को व्यक्त करते हैं । इसके संबंध में मान्यता भी है कि 'भले का फल बुरा और बुरे का फल भला मिल सकता है ।

यथार्थवाद के विषय में प्रेमचंद का विधान है - ''यथार्थवादी अनुभव की बेडियों में जकड़ा होता है और संसार में बुरे चरित्रों की ही प्रधानता है । यहाँ तक कि उज्जवल चरित्र में भी कुछ न कुछ दाग-धब्बे रहते हैं । प्रेमचंद को यथार्थवाद में पूर्ण विश्वास नहीं है । यथार्थवाद

में हमारी दुर्बलताओं, हमारी विषमताओं और हमारी क्रूरताओं का नग्न चित्र होता है और इस तरह यथार्थवाद हमको निराशावादी बना देता है । हमे अपनी चारो ओर बुराई ही बुराई नजर आने लगती है ।

यथार्थवाद का लक्ष्य सामाजिक कुरीतियों की ओर सबका ध्यान आकर्षित करना है । दुर्बलताओं का चित्रण चरमसीमा तक पहुँच जाता है, तब यथार्थवाद आपत्तिजनक लगता है । प्रेमचंद नग्न यथार्थ को कहानी में उपयुक्त नहीं मानते । जीवन की यथार्थ कटुता से पीड़ित व्यक्ति को आदर्शवाद सुख, संतोष और आनंद प्रदान करता है । प्रेमचंद कहते हैं - ''यथार्थवादी यदि हमारी आँखे खोल देता है तो आदर्शवाद हमें उठाकर किसी मनोरम स्थान में पहुँचा देता है ।'' इसलिए आदर्श को सजीव बनाने के लिए यथार्थ का उपयोग होना चाहिए ।

**संदर्भसूचि :**

१ हिन्दी साहित्य कोश भाग-१

२ साहित्यिक निबंध, डॉ प्रतापनारायण टंडन

**डॉ जितेन जे परमार**
**बहाउद्दीन कला महाविद्यालय**
**जूनागढ़**


© Contemporary Research Publication